# डॉ. अश्वनी कुमार, महानिदेशक, *भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद* का हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला का दौरा

## 26.05.2016 से 29.05.2016

डॉ. अश्वनी कुमार, भा.व.से., महानिदेशक, *भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद,* देहरादून ने दिनांक 26.05.2016 से 28.05.2016 तक हिमाचल प्रदेश का दौरा किया ।

डॉ. वी. पी. तिवारी, निदेशक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने 27.05.2016 (प्रात:) संस्थान के सभागार में महानिदेशक महोदय का विधिवत स्वागत किया तथा इस संस्थान द्वारा वानिकी एवं वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों से अवगत करवाया ।

महानिदेशक महोदय ने कहा कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, *भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद,* का एक अग्रणी संस्थान है तथा यह संस्थान दिन प्रतिदिन प्रगति की ओर अग्रसर है । उन्होंने इस संस्थान के द्वारा सीमित संसाधनों के बावजूद *वानिकी* एवं *वानिकी अनुसंधान* के क्षेत्र में अर्जित की गई उपलब्धियों की सराहना की । वैज्ञानिकों के साथ वार्तालाप में उन्होंने कहा कि अब हमें संस्थान में छोटी छोटी अनुसंधान परियोजनाओं के स्थान पर बहुविषयक अनुसंधान परियोजनाएं बनाने एवं संचालित करने पर जोर देने की आवश्यकता है तथा हमें दूसरे संस्थानों के वैज्ञानिकों तथा विषय-वस्तु विशेषज्ञों के साथ मिलकर कार्य करने में भी संकोच नहीं करना चाहिए । उन्होंने बताया कि भारतीय हिमालयन क्षेत्र प्राकृतिक और जैविक विविधता के रूप से देश में सबसे समृद्ध क्षेत्रों में से एक है । अत: यह संस्थान प्रकृति आधारित क्षेत्र की समृद्ध जैव विविधता के संरक्षण तथा विकास के लिए पर्याप्त क्षमता और महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है । उन्होंने आगे बताया हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला,

परिषद् का एक छोटा संस्थान तो है परन्तु इस देश के लगभग 50% वन हिमालयी क्षेत्रों में ही पाए जाते है; इसलिए उन्होंने कहा कि इस संस्थान को एक राष्ट्रीय संस्थान का दर्जा दिया जाना चाहिए । संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा कर्मचारियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि परिषद में अपने संक्षिप्त परन्तु महत्वपूर्ण कार्यकाल में मानव संसाधन विकास सम्बन्धी मुद्दे जरुर रहे पर इन समस्याओं को हल करने के लिए उन्होंने हर संभव प्रयास किये । सभी श्रेणियों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके द्वारा परिषद में की जा रही सेवाओं के लिए उन्होंने समय समय पर पदोन्नतियां सुनिश्चित की, चाहे वो वैज्ञानिकों को लचीली पारितोषिक योजना (Flexible Complementing Scheme) की बात हो या फिर अधिकारियों एवं कर्मचारियों की पदोन्नतियां । उन्होंने संस्थान के निदेशक, समूह समन्वयक अनुसन्धान तथा उनकी सम्पूर्ण टीम की सराहना करते हुए कहा कि पिछले कुछ वर्षों की वित्तीय स्थिति को देखते हुए व बहुत ही सीमित संसाधनों में, संस्थान ने प्रस्तावित कार्यों एवं अनुसंधान परियोजनाओं को सुचारू रूप से चलाया, जिसके लिए संस्थान के समस्त वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारी बधाई के पात्र है । अपने अभिभाषण के अंत में उन्होंने संस्थान के सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों का धन्यवाद् किया ।

इस संबोधन के पश्चात् महानिदेशक महोदय ने क्षेत्रीय अनुसन्धान केंद्र, शिल्लारू का दौरा भी किया तथा संस्थान द्वारा इस केंद्र में किए जा रहे अनुसंधान कार्यो का अवलोकन भी किया। इसके पश्चात् नारकंडा के समीप हाट्टू चोटी, जो की अल्पीय चारागाह (alpine pasture) की श्रेणी में आता है, का भी दौरा किया तथा मौके पर उपस्थित वैज्ञानिकों को ऐसी चरागाहों के रख रखाव व अन्य अनुसन्धान से जुड़े मुद्दों पर भी चर्चा की ।

डॉ. अश्वनी कुमार, महानिदेशक, *भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद* दिनांक 28.05.2016 (पूर्वान्ह) को, डॉ. एस.पी. वासुदेवा, भा.व.से., प्रधान मुख्य-अस्म्यपाल, श्री एस.एस. नेगी, भा.व.से., प्रधान मुख्य अरण्यपाल (वन्य जीव), तथा हिमाचल प्रदेश वन विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से भी मुलाकात की तथा परिषद के इस क्षेत्रीय संस्थान की मूलभूत सुविधाएँ प्रदान करने, अनुसंधान सम्बन्धी मुद्दों में सहयोग व अन्य सम्बंधित क्षेत्रों में योदान एवं सहायता प्रदान करने के लिए उनका आभार व्यक्त किया और यह आशा व्यक्त की कि वे भविष्य में भी इस संस्थान को अपना एक भाग समझकर पूर्ण सहयोग एवं सहायता प्रदान करते रहेंगे ।

डॉ. अश्वनी कुमार, महानिदेशक, *भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद* दिनांक 28.05.2016 को 03.30 बजे सायं, इस संस्थान द्वारा हिमाचल प्रदेश वन विभाग के सहयोग से पॉटर हिल (नजदीक समर हिल), शिमला 171 005 में स्थापित की जा रही पश्चिमी हिमालय समशीतोष्ण तरुवाटिका का निरीक्षण किया तथा वहां एक पत्रकार वार्ता का आयोजन भी किया । पत्रकारों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि *भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद* (*भा.प.शि.अ.वा.*), देहरादून, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत संस्था है, जो की देश में *वानिकी अनुसंधान* को बढ़ावा देने और पर्यावरण से सम्बंधित अध्ययन करने के लिए एक प्रमुख संगठन है। शोध के परिणामों का प्रचार प्रसार करना भी इस संस्थान के जनादेश में से एक है ।

पत्रकारों को संबोधित करते हुए उन्होंने यह भी बताया कि भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद, जिसका मुख्यालय, देहरादून में स्थित है, देश में शीर्ष संस्था है जो भारत सरकार, राज्य सरकार तथा अन्य हितधारियों जैसे किसानो, उधोगो तथा शैक्षणिक क्षेत्र को वन संरक्षण के क्षेत्र में उभर रही चुनौतियों का सामना करने के लिए वानिकी अनुसन्धान तथा प्रौधोगिकियों से सम्बनिधत मामलों पर परामर्श देती है। वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून तथा परिषद् के अन्य क्षेत्रीय संस्थानों के माध्यम से वैज्ञानिकों ने वानिकी के क्षेत्र में 150 वर्षों से प्रबन्धन प्रौधोगिकियां विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह विश्व के अर्ध उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में वानिकी अनुसन्धान की सबसे पुरानी संस्था है।

*परिषद* अपने शिमला स्थित हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान के माध्यम से वानिकी तथा पर्यावरण से सम्बंधित विभिन्न अनुसन्धान कार्य कर रहा है । उन्होंने कहा कि पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों में वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला उन्नति कर रहा है तथा अपने कार्यों से लगातार प्रसिद्धी पा रहा है । हिमालयी नदियों से देश को 60 प्रतिशत जलापूर्ति होती है, अतः नदियों के उद्गम वाले हिमालयी राज्यों में नदियों का

जलबहाव निरन्तर एवं अविरल रखना अनिवार्य है। हिमालय का वनक्षेत्र स्वस्थ पर्यावरण के मानकों पर अभी तक खरा उतरा है, परन्तु भविष्य में इसको बनाए रखने हेतु हिमालयी जैवविविधता का संरक्षण व संवर्धन स्थानीय लोगों के साथ मिलकर करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हिमालयी क्षेत्र वानिकी के क्षेत्र में एक बहुत बड़ा क्षेत्र है, यहाँ कि भौगोलिक स्थिति भी बहुत विचित्र एवं अति दुर्लभ है, यह क्षेत्र वनों के साथ-साथ-महत्वपूर्ण जड़ी बूटियों का विशाल भंडार भी है । इसलिए उन्होंने और जोर देकर कहा कि हिमालय क्षेत्र में वानिकी के विस्तार के लिए हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान का विस्तार किया जाना चाहिए । उन्होंने विश्वास दिलाया कि परिषद् अपने स्तर पर पूर्ण प्रयास कर रही है कि हिमालयी क्षेत्रों की वानिकी एवं पर्यावरण से सम्बंधित विभिन्न परियोजनाओं को सुचारू रूप से चलाया जाये जिससे कि भविष्य में हिमालयी क्षेत्रों में पर्यावरण को संरक्षित करने में कहीं न कहीं वह भी अपना योगदान दे सकें ।

हिमालय समशीतोष्ण तरुवाटिका, पॉटर हिल के विषय में जानकारी देते हुए उन्होंने पत्रकारों को बताया कि इस महत्वकांक्षी वाटिका को हिमाचल प्रदेश वन विभाग की सहायता से हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला द्वारा विकसित किया जा रहा है, जो कि अपने आप में एक अनूठा एवं महत्वपूर्ण प्रयास है । पश्चिमी हिमालय शीतोष्ण तरुवाटिका स्थानीय पौधों की बाह्य स्थान (*ex situ*), क्षेत्र की पहली पौध सरंक्षण सुविधा होगी और यह पश्चिमी हिमालय में स्थापित सरंक्षिकाओं में से एक होगी । पारिस्थिकी सरंक्षण के आलावा यह वाटिका इस क्षेत्र के शोकिया व पेशेवर उद्यान कला समुदाय को स्थानीय अनुसन्धान तथा वर्धन सुविधा प्रदान करेगा । अंत: में महानिदेशक महोदय ने इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया से आये विभिन्न पत्रकारों का धन्यवाद किया ।

निदेशक

हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला

# पत्रकार वार्ता

# मीडिया कवरेज

GLOBAL WARMING

## Call for integrated approach to mitigate effects

BHANU P LOHUMI
TRIBUNE NEWS SERVICE

SHIMLA, MAY 29

Director-General, Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE), Ashwani Kumar has cautioned against global warming and called for an integrated approach to mitigate its effects, especially in the Himachal region.

"Advance preparations and multi-disciplinary approach coupled with intensive research is needed to combat the impact of climate change which would adversely affect agriculture, horticulture, forestry, biodiversity, flora and fauna and disturb the cropping patterns", said Kumar who was here on a visit to Himalayan Forestry Institute here.

"The global warming being a slow process, the rise in temperature recorded so far is 1.75 degree. As per estimates, it can reduce crop yield by 15 per cent and there is dire need to develop high temperature resilient crop varieties and adopting organic farming could be a possible solution", he said adding that the necessity of regeneration of biodiversity in Himalayan region is more as it was key to conservation and renewal of water sources.

> "As per estimates, global warming can reduce crop yield by 15 per cent and there is dire need to develop high temperature resilient crop varieties and adopting organic farming could be a possible solution"
> Ashwani Kumar, DIRECTOR-GENERAL, ICFRE

Kumar pleaded for setting up a laboratory for certification and authentication of organic farm produce and educating the farmers about benefits of organic farming which fetched 200 to 250 per cent higher returns.

Stressing that the Himalaya region has an added advantage that it is "store house" of rare medicinal herbs, Kumar said that preservation and propagation of these rare species of herbs grown in high altitude areas can multiply the income of the farmers besides keeping them insulated from climate change.

The Himalayas are facing a serious problem of natural regeneration of several species of trees, including 'deodar' (pine) trees not taking place and the Himalayan Forestry Research Institute has taken a up a project for regeneration of deodar, besides another project to gauge the carrying capacity of Shimla, assigned by National green Tribunal(NGT).

Another project for regeneration and conservation of endangered Himalaya species is also underway at Potter's Hills in Shimla with the support of the state forest department, he added. There are nine institutes under the ICFRE working in various parts of the country to formulate, organise, direct and manage forestry research, transfer developed technologies to states and other agencies and impart forestry education, Kumar said.

However, to handle the problems of the Himalayan region which are "Himalayan in magnitude" an integrated and multi-disciplinary approach is needed for which a National Institute needs to be set up, he suggested.

The Tribune (Himachal Edition) Mon, 30 May 2016
epaper.tribuneindia.com/c/10639096



# हिमाचल में बढ़ रहा ग्लोबल वार्मिंग का खतरा : अश्वनी

## कहा-देवदार के पेड़ों का अस्तित्व भी खतरे में

शिमला, 28 मई (जस्टा): हिमाचल में ग्लोबल वार्मिंग का खतरा बढ़ रहा है, जिसके कारण वन संपदा व कृषि पर संकट पैदा हो गया है। यह बात भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के निदेशक डा. अश्वनी कुमार ने शनिवार को शिमला में आयोजित पत्रकार वार्ता में कही। उन्होंने कहा कि हिमाचल में ग्लोबल वार्मिंग के कारण प्रतिवर्ष तापमान बढ़ता जा रहा है। जो तापमान भूमि के नीचे था वही तापमान अब भूमि के काफी ऊपर चला गया है।

तापमान 1 हजार फुट पर 1 डिग्री बढ़ जाता है और अभी तक 4 डिग्री तापमान बढ़ा है, जिससे कि वन संपदा व कृषि पर इसका काफी प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि ग्लोबल वार्मिंग के करण ही वनों में आए दिन आग लग रही है और हमारी वन संपदा जल कर राख हो रही है। उन्होंने कहा कि गर्मी बढ़ती जा रही है और स्त्रोत सूखते जा रहे हैं। यही नहीं यह दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाएगा जोकि मानव जाती के लिए खतरनाक साबित होगा। उन्होंने कहा कि हिमाचल की वन संपदा जिसमें मुख्य रूप से देवदार के पेड़ हैं और देवदार हिमाचल में काफी प्रसिद्ध पेड़ माना जाता है, उनमें बीमारी लग रही है, जिसके कारण लगातार देवदार के पेड़ खत्म होते जा रहे हैं। यही नहीं पहले जहां देवदार के घने जंगल होते थे, वहीं वर्तमान में अब कंक्रीट के जंगल हो गए हैं, इससे भी हमारे वनों को नुक्सान पहुंचा है। उन्होंने कहा कि संस्थान में पूरे हिमालय के 120 विभिन्न प्रजातियों के पेड़-पौधे लगाए गए हैं, जिसके बारे में शोध किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि संस्थान में कई आयुर्वेदिक दवाइयों के पौधे लगाए गए हैं, जोकि आने वाले समय में लाभकारी सिद्ध होंगे। उन्होंने कहा कि यह संस्थान हिमालय पर शोध कर अपनी रिपोर्ट एन.जी.टी. को सौंपेगा।

निदेशक अश्वनी कुमार ने कहा कि जंगलों में कई प्रकार के फ्रूट पाए जाते हैं जिसके बारे में सेना के जवानों को जानकारी दी जाती है, ताकि उन्हें यह पता चले कि कौन से फ्रूट किस तरह के हैं। उन्होंने कहा कि जंगली फ्रूट के बारे में हिमाचल में स्टडी की जा रही है, ताकि कालेज व स्कूल के बच्चों को भी इसके बारे में जानकारी प्राप्त हो।

पंजाब केसरी ई-पेपर Sun, 29 May 2016
epaper.punjabkesari.in/c/10639867

रविवार | चंडीगढ़ | 29 मई 2016 | अमर उजाला

# राष्ट्रीय संस्थान बने एचएफआरआई तो और बेहतर होंगे परिणाम : डॉ. अश्वनी

**आईएफआरईसी के महानिदेशक ने किया संस्थान का दौरा**

अमर उजाला ब्यूरो

**शिमला।** देहरादून स्थित भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के महानिदेशक डॉ. अश्वनी कुमार ने शनिवार को हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के वेस्टर्न हिमालयन टेंपरेट आर्बोरेटम का निरीक्षण किया। उन्होंने एचएफआरआई द्वारा हिमालयन प्रजातियों के पौधों के संरक्षण के कार्य को सराहा। साथ ही इसमें और प्रजातियों के पौधों को भी शामिल करने का सुझाव दिया।

- एचएफआरआई के आर्बोरेटम के प्रयास की भी की सराहना
- कहा, पौधों के बाद अब जंगली फलों पर भी रिसर्च करेगा संस्थान

इसके बाद मीडिया से बातचीत में डॉ. अश्विनी ने कहा कि एचएफआरआई हिमालयन रीजन के पर्यावरण और भौगोलिक स्थितियों पर लगातार रिसर्च कर अच्छे परिणाम दे रहा है। अगर इस संस्थान को राष्ट्रीय संस्थान का दर्जा देकर और आधुनिक किया जाए तो परिणाम और बेहतर होंगे। कहा कि आने वाले समय में संस्थान हिमालय क्षेत्र के वनों के फलदार पौधों पर भी शोध करेगा। ग्लोबल वार्मिंग का सबसे ज्यादा असर हिमालयन बेल्ट पर पड़ रहा है। यही कारण है कि कई देशों के प्रतिनिधि हिमालय कंजरवेशन के प्रति चिंता जता रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग जंगलों में लगने वाली आग के कई कारणों में एक प्रमुख कारण है। इसके अलावा उन्होंने चौड़ी पत्तियों वाले पेड़ों के जरिये जंगलों की आग पर काबू रखने के रिसर्च पर भी काम करने की बात कही। बताया कि एचएफआरआई के कार्यों की वजह से ही पॉलिसी संबंधित रिसर्च का काम भी संस्थान को दिया जा रहा है। इनमें रोहतांग में पर्यावरण बदलाव पर रिसर्च के अलावा धर्मशाला, कसौली किन्नौर भी भी पर्यावरण पर रिसर्च का काम संस्थान कर रहा है। अश्विनी खड्ड के आसपास की जैव विविधता पर भी संस्थान रिसर्च कर रहा है।

# हिमाचल में बढ़ रहा ग्लोबल वार्मिंग का खतरा

## * देवदार के पेड़ों का अस्तित्व खतरे में : डॉ.अश्वनी कुमार

शिमला, 28 मई (अ.स.) : हिमाचल में ग्लोबल वार्मिंग का खतरा बढ़ रहा है जिसके कारण वन संपदा व कृषि पर संकट पैदा हो गया है। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के निदेशक डॉ. अश्वनी कुमार ने शनिवार को शिमला में जानकारी देते हुए बताया कि हिमाचल में ग्लोबल वार्मिंग के कारण प्रतिवर्ष तापमान बढ़ता जा रहा है उन्होंने कहा कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण ही वनों में आए दिन आग लग रही है और हमारी वन संपदा जल कर राख हो रही है। अश्वनी कुमार ने कहा कि आजकल गर्मी बढ़ती जा रही है और पानी के स्त्रोत सूखते जा रहे हैं और यह संकट दिन-प्रतिदिन बढ़ता जायेगा, जो मानव जाति के लिए खतरनाक साबित होगा। उन्होंने कहा कि हिमाचल की वन संपदा, जिसमें मुख्य रूप से देवदार के पेड़ हैं, उनमें बीमारी लग रही है, जिसके कारण लगातार देवदार के पेड़ खत्म होते जा रहे है। यही नहीं पहले जहाँ देवदार के घने जंगल होते थे, वहाँ वर्तमान में अब कंक्रीट के जंगल बन गए हैं, जिससे भी हमारे वनों को नुकसान पहुँचा है।